**नान्देश्वर तालाब** : उदयपुर में हर 2–5 कि.मी. की दूरी पर झीलें स्थित हैं। कुछ कुदरत की देन हैं तो कुछ इंसान का भागीरथ प्रयास। नान्देश्वर तालाब भी इनमें से एक है। उदयपुर के पश्चिम में पिछोला झील को भरने वाली सीसारमा नदी से पूर्व काली घाटी–अलसीगढ़ से बहकर आने वाले नाले एवं देवास–प्रथम के जल प्रवाह क्षेत्र में बहती कोटारी नदी पर बाँध बनाकर इसका निर्माण बाढ़ नियंत्रण के अन्तर्गत किया गया है। इसके उत्तरी छोर को बांधा गया है और इसे पिछोला झील से जोड़ने के लिए पूर्वोत्तर भाग पर पहाड़ को चीर कर जल निकास का रास्ता बनाया गया है। भौगोलिक दृष्टि से इस तालाब की स्थिति बहुत सुरम्य और उपयुक्त है। यह तालाब चारों ओर हरी–भरी पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यह एक कपनुमा आकृति का है, जिसकी जल भराव क्षमता बढ़ाने की प्रबल संभावना है। इसकी कुल एवं उपयोगी जल की भराव क्षमता क्रमशः 3.96 एवं 3.54 मिलियन घनमीटर है। इसका जलग्रहण क्षेत्र 51.8 वर्ग कि.मी. है। इसकी कुल भराव क्षमता मात्र 7 फीट है जिसमें 27 फीट तक वृद्धि की जा सकती है। अब यह तालाब एक खूबसूरत पर्यटन स्थल बन चुका है। यहां पर स्थानीय पर्यटकों के साथ विदेशी पर्यटक भी पहुँचने लगे हैं। वर्षाकाल में इसका प्रारम्भिक बहाव क्षेत्र ''फन फ्लोइंग वाटर'' उदयपुरवासियों के लिए एक पिकनिक स्पोट के रूप में परिवर्तित हो जाता है। साथ ही यहाँ पर एक शानदार जंगल भी विकसित हो रहा है। वर्तमान में चारों ओर की पहाड़ियां जंगली बबूल से आच्छादित हैं, इनके स्थान पर इस क्षेत्र में उपयुक्त पौधों की प्रजातियों का रोपण कर इसे विकसित करने का पूरा प्रयास किया जाना चाहिये। इसके पूर्वी किनारे पर वन विभाग की एक विकसित नर्सरी भी स्थित है।

शहर से 10 कि.मी. दूर नान्देश्वर तालाब के निर्माण के लिए वर्ष 1980 में जमीनों को अवाप्त किया गया था।

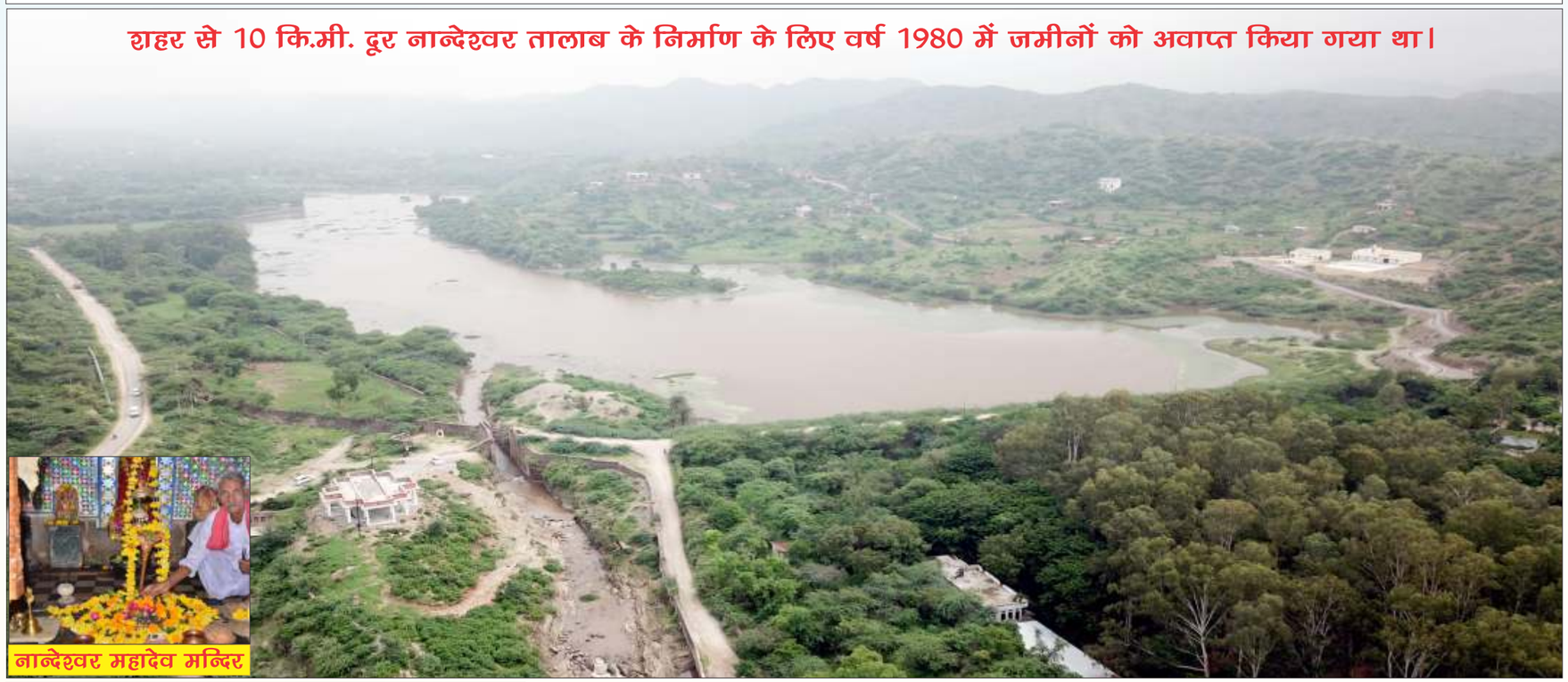



नान्देश्वर महादेव मन्दिर

| नान्देश्वर तालाब | |
|---|---|
| स्थिति | उदयपुर से दक्षिण–पश्चिम की ओर |
| निकटस्थ गांव/तहसील | नाई, गिर्वा |
| उदयपुर से दूरी | 10 कि.मी. |
| देशान्तर | 73°38'00'' पूर्वी देशान्तर |
| अक्षांश | 24°31'00'' उत्तरी अक्षांश |
| नदी/नाला | कोटड़ा नदी, बनास बेसिन, बेड़च सब–बेसिन |
| निर्माण वर्ष | 1981–82 |
| निर्माण लागत | 13.57 लाख रुपये |
| बाँध का प्रकार : कृत्रिम शुद्ध मीठे पानी की झील, चिनाई बाँध | |
| शुद्ध जलग्रहण क्षेत्र | 51.80 वर्ग किलोमीटर |
| औसत वार्षिक वर्षा | 25 इंच/635 एमएम |
| सकल जल भराव क्षमता | 3.96 एमसीएम |
| शुद्ध जल भराव क्षमता | 3.54 एमसीएम |
| पूर्ण जलाशय स्तर | – |
| अधिकतम जल स्तर | 45.81 मीटर |
| टैंक बंध स्तर | 46.27 मीटर |
| सील स्तर | 43.68 मीटर |
| पूर्ण टैंक गेज | 2.13 मीटर/7 फीट |
| स्तर–जीटीएस/आर्बिटरी | आर्बिटरी |
| डिजाइन अधिकतम प्रवाह | 96.28 क्यूमेक |
| मिट्टी के बाँध की लम्बाई | 255 मीटर |

उपग्रह चित्र

इस तालाब के पास से राष्ट्रीय राजमार्ग 58–ई गुजरता है जो झाड़ोल से होकर ईडर–गुजरात तक जाता है।

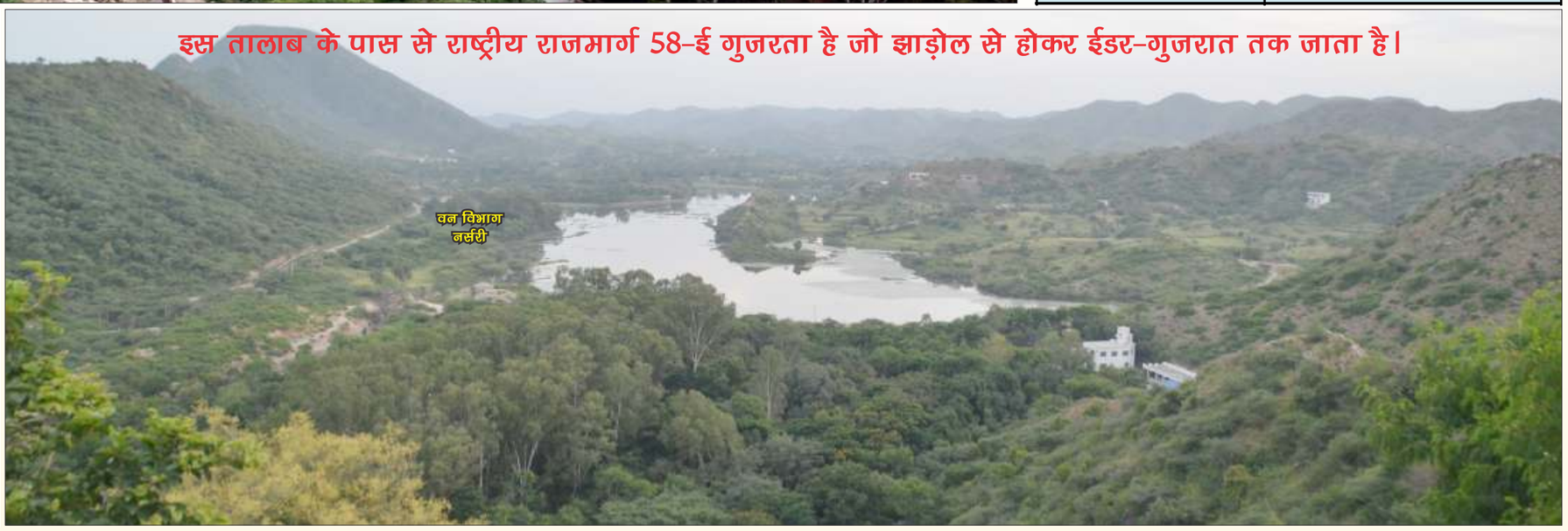

**एक पसन्दीदा पिकनिक स्पॉट** : नान्देश्वर बांध (चैनल) से निकली जलधारा के दर्शनीय स्वरूप को देखने उदयपुरवासी एवं पर्यटक आदि सहर्ष पहुंचते हैं। कभी–कभी तो युवाजन अपनी जान भी जोखिम में डालते हुए देखे जा सकते हैं। पानी में सिर के बल छलांग लगा रहे युवकों को अहसास नहीं कि नीचे पत्थर हैं व चोट लगने पर जान तक जा सकती है। इस हेतु उबड़–खाबड़ चट्टानों को हटाकर वहां गहराई के सूचकांक लगाना बेहतर होगा।

इस बांध के प्राकृतिक बहाव क्षेत्र को पिकनिक एवं क्रीड़ा स्थल के रूप विकसित किया जा सकता है जो कि इसकी भौगोलिक स्थिति के अनुकूल है। इसके अन्तर्गत बहाव क्षेत्र को एक झरने की तर्ज पर विकसित कर एवं वाटर फाल के अन्तराल क्षेत्र में खड्डे एवं नुकीले पत्थरों को हटाकर एक सुन्दर, समरूप जल–क्रीड़ा क्षेत्र के रूप में विकसित किया जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त यह तालाब नाव संचालन के लिए भी उपयुक्त है तथा इसके प्राकृतिक सौन्दर्य एवं झील में स्थित टापुओं का भी अपना महत्व है। किसी उपयुक्त टापू को पर्यटकीय दृष्टि से विकसित किया जाना चाहिये। इससे यहाँ पर आने वाले पर्यटक काफी अभिभूत हो सकेंगे। उपरोक्त कार्यों से पर्यटन की दृष्टि से इस तालाब का महत्त्व कई गुना बढ़ जायेगा एवं स्थानीय लोगों के रोजगार में भी वृद्धि हो सकेगी।

नान्देश्वर तालाब : ओवरफ्लो हेतु पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाना चाहिये।

**प्रदूषण एवं अतिक्रमण** : इस तालाब में भी अवांछनीय जलीय घास एवं काई आदि होने के साथ ही यह अतिक्रमण से भी ग्रस्त है। अन्य झीलों की तरह इस तालाब की भी साफ–सफाई की नियमित आवश्यकता है। इस झील की गहराई के साथ ही साथ इसकी चौड़ाई और लम्बाई भी बढ़ाई जाने हेतु समुचित प्रयास आवश्यक है। जल अभिवर्द्धन क्षमता में वृद्धि कर इसके स्वच्छ जल का उपयोग पेजयल के रूप में किया जा सकता है।

नान्देश्वर तालाब : उत्तरी छोर

नान्देश्वर तालाब : दक्षिणी छोर

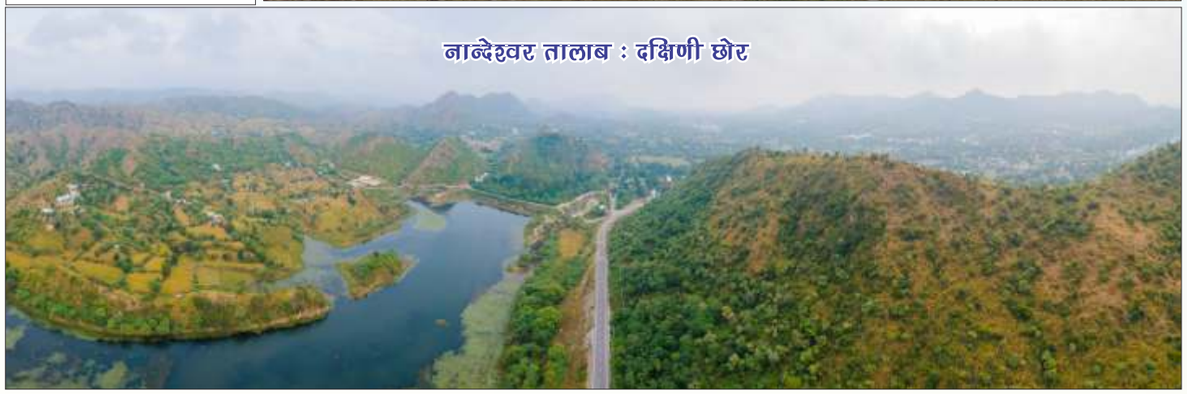

नान्देश्वर तालाब : पूर्ण भराव स्तर पर

अव्यवस्थित गाद निकास

वर्षा ऋतु में शहरवासियों के आकर्षण के केन्द्र नान्देश्वर तालाब के ग्रीष्म ऋतु में रिक्त होने पर अवैध रूप से मिट्टी का दोहन प्रतिवर्ष किया जाता है। तालाब से निकाली जा रही मिट्टी ईंटे बनाने के लिए उपयुक्त होती है तथा प्रतिदिन करीब 60–70 ट्रेक्टर मिट्टी निकाली जाती है। इससे तालाब के पेटे में स्थान–स्थान पर अनियमित गड्ढ़े हो चुके हैं। जल संसाधन विभाग इस कार्य को विधिपूर्वक सम्पन्न करावें तो इसकी गहराई समान होने के साथ ही जल भराव क्षमता में भी अभिवृद्धि होगी। इससे इसकी सुन्दरता में वृद्धि के साथ अधिक संख्या में पर्यटक यहाँ भ्रमण पर आयेंगे।

**महत्त्वपूर्ण सुझाव** : वर्तमान में इस तालाब की भराव क्षमता में अभिवृद्धि की विपुल संभावनाएँ है। इसके अधिशेष जल की निकासी एक छोटे बाँध की रपट से होती है। बांध की ऊंचाई को बढ़ाकर उसमें सलूस गेट लगाये जा सकते हैं। अभी प्रतिवर्ष भराव क्षमता से 9 फीट ऊँचाई तक 3 फीट चौड़ाई के दो ब्लॉक में पटिये लगाकर करीब 30 एमसीएफटी अतिरिक्त जल को रोका जाता है। प्रतिवर्ष पटिये लगाने के बजाय स्थायी रूप से सलूस गेट लगाना अधिक व्यावहारिक रहेगा और इसकी भराव क्षमता जो कि 27 फीट तक है, इस स्तर तक वृद्धि संभव है। भराव क्षमता वृद्धि में कुछ कृषि भूमि डूब सकती हैं जिसका अधिग्रहण किया जा सकता है। बांध में जल क्षमता अभिवर्द्धन से कोई सड़क मार्ग भी अवरुद्ध नही होगा क्योंकि इस क्षेत्र से गुजरने वाला उदयपुर–झाड़ोल राष्ट्रीय राजमार्ग–58 पर्याप्त ऊंचाई के साथ अधिकतम् जल भराव स्तर पर स्थित है। जल निकासी द्वार पर अवरोध या गेट नहीं लगाने से इस तालाब की पूर्ण भराव क्षमता का उपयोग नहीं हो पा रहा है। इस ओर अतिशीघ्र ध्यान देने की आवश्यकता है। वर्तमान में इसका पानी ग्रेविटी से पिछोला झील तक पहुँचाया जा रहा है। नान्देश्वर तालाब से पिछोला झील तक लगभग 5 कि.मी. की दूरी तय करते हुए यह पानी पिछोला झील में समाहित होता है। इससे वाष्पीकरण एवं सीपेज से काफी मात्रा में पानी की हानि होती है। इस तालाब को नान्देश्वर फिल्टर प्लांट से सीधे जोड़कर इसके पानी को लिफ्ट कर पेयजल के रूप में उपयोग में लिया जाना अधिक उपयुक्त होगा।

नान्देश्वर तालाब में धीरे–धीरे पानी की आवक बनी रहने से जल संसाधन विभाग के द्वारा लगाई गई लोहे की चद्दरों के ऊपर से पानी गिरना शुरू हो जाता है। मानसून के चले जाने के बाद नान्देश्वर तालाब में जल निकासी की रपट पर और अधिक चद्दरें लगाकर और ज्यादा पानी रोका जाता है ताकि गर्मी के दिनों में पिछोला खाली होने पर यहाँ से पानी लाया जा सके। तालाब की रपट पर स्थायी एवं मजबूत सलूस गेट लगाने से प्रतिवर्ष चद्दर लगाने का खर्च नहीं होने के साथ अतिरिक्त पानी संचित करना संभव होगा। इस तालाब को 7 फीट से बढ़ाकर 27 फीट तक भरा जा सकता है। इसके लिए यदि अतिरिक्त जमीनों के साथ वन विभाग की नर्सरी भी अवाप्त करना आवश्यक हो तो किया जाना चाहिये।

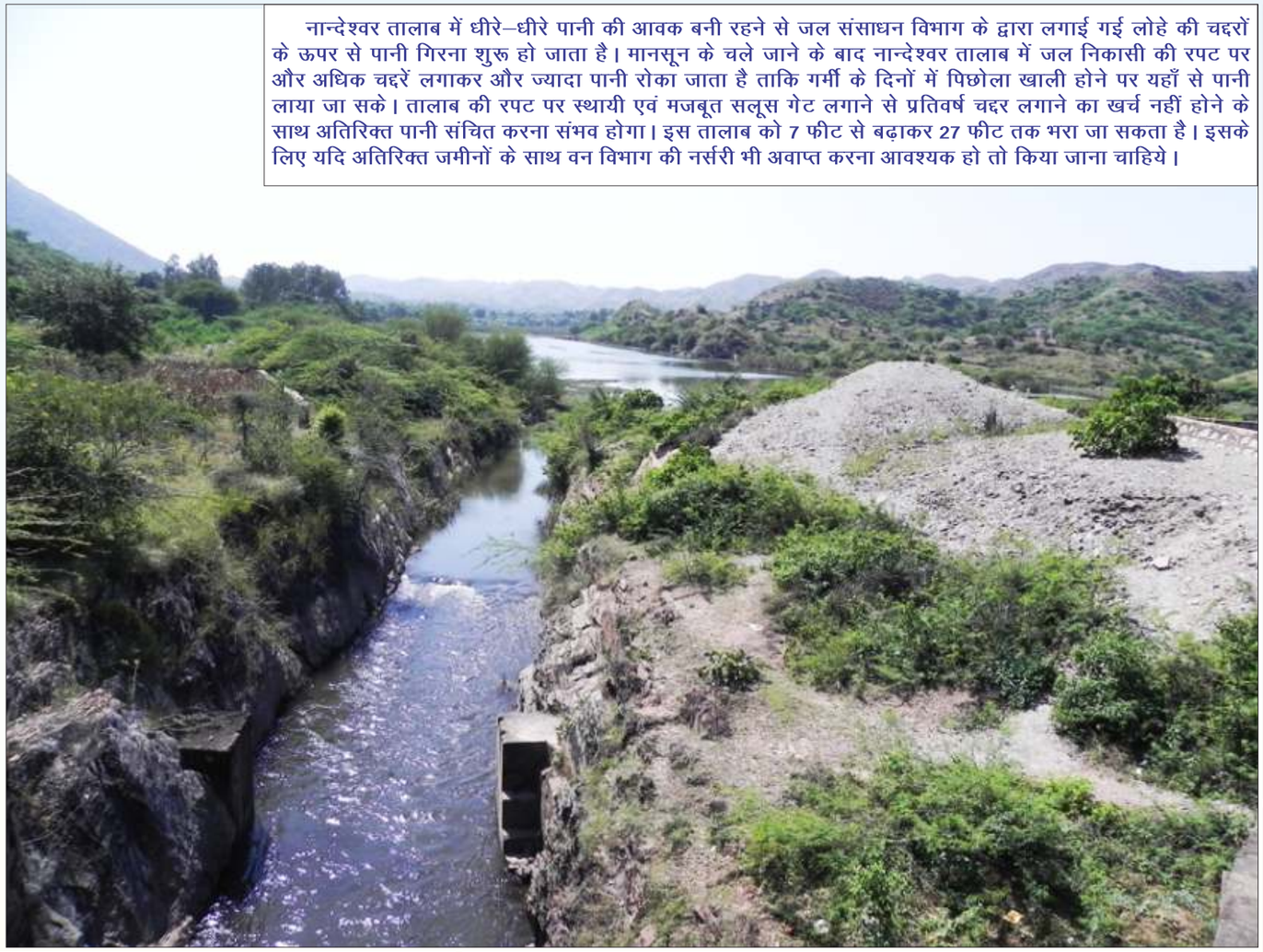

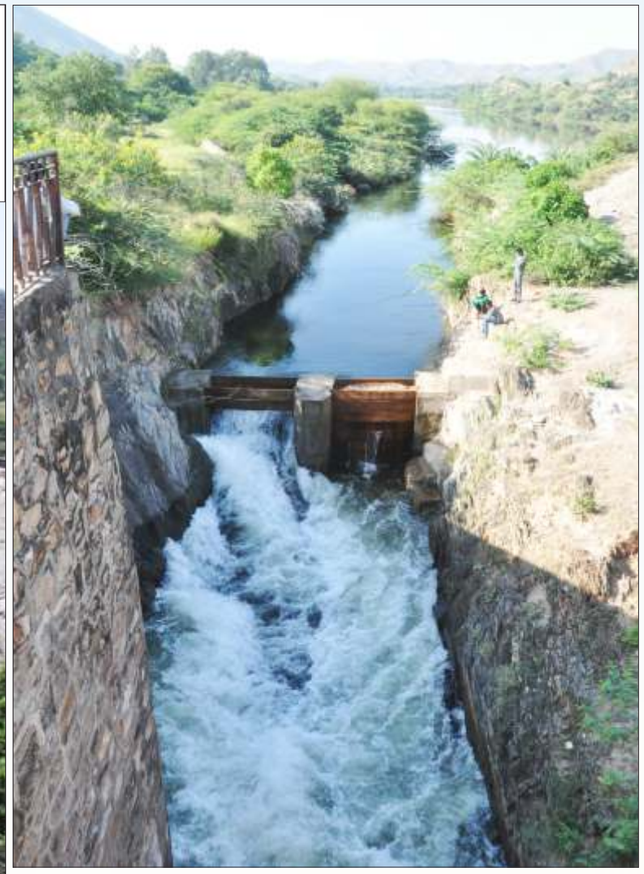

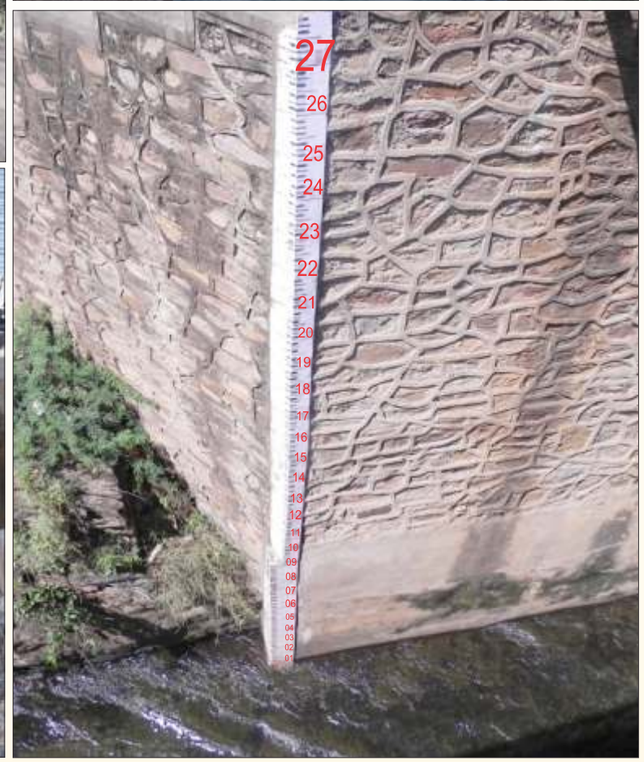

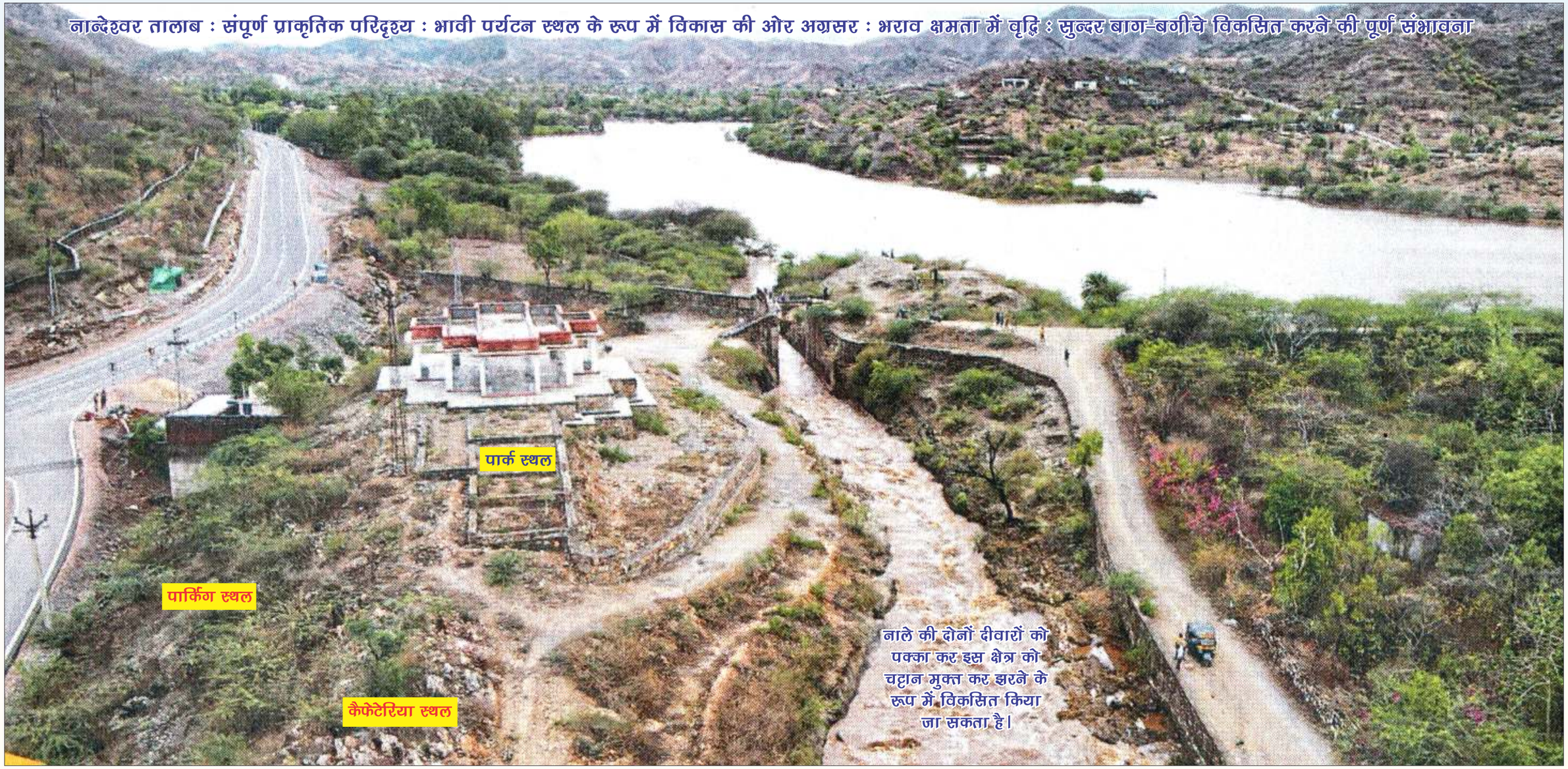

# नान्देश्वर तालाब : संपूर्ण प्राकृतिक परिदृश्य : भावी पर्यटन स्थल के रूप में विकास की ओर अग्रसर : भराव क्षमता में वृद्धि : सुन्दर बाग-बगीचे विकसित करने की पूर्ण संभावना




उदयपुर–झाड़ोल राष्ट्रीय राज मार्ग 58–ई पर शहर से मात्र 10 कि.मी. की दूरी पर स्थित बाढ़ नियंत्रण के उद्देश्य से निर्मित यह तालाब एक महत्त्वपूर्ण पिकनिक स्थल के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। इसका प्रारम्भ नगर निगम, उदयपुर ने इसके पूर्वी किनारे पर एक बड़ा विश्राम स्थल बनाकर कर दिया है। इस विश्राम स्थल के ढलान पर सुन्दर पार्क विकसित करने के साथ ही कुछ दूरी पर शहरवासियों एवं पर्यटकों की सुविधा हेतु एक वाहन पार्किंग स्थल एवं एक कैफेटेरिया बनाया जा सकता है। इस तालाब के पानी के निकास स्थल की दोनों दीवारों को पक्का बनाकर इसके मध्य में बहते पानी के चट्टान युक्त स्थल को चट्टान मुक्त कर एक सुन्दर झरने के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। इस नाले के अंतिम पुल के पास वाले भाग को छोटे पोण्ड में परिवर्तित कर इसके पानी को रिसाईक्लिंग करते हुए प्रत्येक रविवार को एक आकर्षक झरने के रूप में बहाया जावे तो शहरवासी एवं पर्यटकगण इस बहते जल का आनन्द ले सकते हैं।